IJAER/July- August- 2021/Volume-10/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मुंशी प्रेमचंद्र जी के उपन्यास तथा मध्यम वर्ग का एक अध्ययन

डा० फतेह सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष: हिन्दी -विभाग, शोध एवं अध्ययन केन्द्र

नेशनल पी०जी० कालेज, भोगाँव ,मैनपुरी, उत्तर प्रदेश, भारत।

सार

मुंशी प्रेमचंद, भारतीय साहित्य के अन्यतम महान कथाकारों में से एक हैं। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज के अनेक पहलुओं को छूती हैं, खासकर मध्यम वर्ग के जीवन और संघर्षों को उन्होंने अपनी रचनाओं में अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत किया है। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में समाज की विभिन्न वर्गों की मूल्यों, विचारधारा और संघर्षों का विवेचन किया गया है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास आम आदमी के दर्द, संघर्ष, और आत्म-समर्पण को प्रकट करते हैं। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में मध्यम वर्ग के जीवन का प्रतिष्ठान महत्व है। उनकी रचनाओं में मध्यम वर्ग के लोगों की आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया गया है। उन्होंने इस वर्ग के लोगों के जीवन की सच्चाई को बेहद संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों का अध्ययन करने से हमें भारतीय समाज के मध्यम वर्ग की विशेषताओं, संघर्षों, और सपनों की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनकी रचनाएँ हमें समाज में न्याय, समानता, और अधिकार की महत्वता को समझने में मदद करती हैं।

मुख्य शब्द: *मुंशी प्रेमचंद्र, उपन्यास, मध्यम वर्ग, भारतीय समाज, नैतिकता, मानवता*

परिचय

मुंशी प्रेमचंद (1880–1936) भारतीय साहित्य के एक प्रमुख नाम हैं, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट कथाओं और उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज की सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक समस्याओं का परिचय दिया। प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी, भारत में हुआ था। प्रेमचंद की रचनाएँ व्यापक रूप से हिंदी और उर्दू में हैं, लेकिन उन्होंने अन्य भारतीय भाषाओं में भी लिखा। उनकी रचनाओं में समाज के अन्यतम वर्गों के जीवन का विवरण, विचारधारा, और संघर्ष प्रमुख था। उनके उपन्यास और कहानियाँ भारतीय समाज में समाजिक न्याय, समानता, और मानवता के प्रति उनके विश्वास को प्रकट करती हैं। प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यासों में "गबन", "निर्गुण", "रंगभूमि", "कर्मभूमि", और "गोदान" शामिल हैं। उनकी कहानियों में आम आदमी के जीवन की समस्याओं, सपनों, और आत्म-समर्पण का प्रतिष्ठान महत्वपूर्ण था। प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी भारतीय साहित्य के अद्वितीय कोने में स्थापित हैं और उन्हें विश्व साहित्य की श्रेणी में माना जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में कई श्रेष्ठ कृतियाँ हैं, जिनमें समाज, मानवता, और व्यक्तित्व के मुद्दों पर गहरा ध्यान दिया गया है। उनके उपन्यासों में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम शामिल हैं:

"**गोदान**": यह उनका प्रसिद्धतम उपन्यास है, जो समाज में गरीबी, सामाजिक विविधता, और मानवता के मुद्दों को उजागर करता है।

"**निर्मला**": एक और महत्वपूर्ण उपन्यास, जो एक समाज में औरत की स्थिति और उसके अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करता है।

"**रागदरबारी**": यह उपन्यास सामाजिक व्यवस्था और समाज के विभिन्न वर्गों की अवस्था पर ध्यान केंद्रित करता है।

Copyright@ijaer.org

"काफ़न": इस उपन्यास में, प्रेमचंद ने अधिकार, धर्म, और सामाजिक न्याय के मुद्दे पर गहराई से विचार किया है।

"गबन": यह उपन्यास नौकरी और समाज में अधिकार के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करता है।

मध्यम वर्ग

समाज को तीन बड़ी वर्गों में विभाजित किया जाना आम है: निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग । यह स्तरीकरण मुख्य रूप से आर्थिक साधनों की उपलब्धता द्वारा दिया गया है जिनके पास कम है, वे समाज के निचले क्षेत्र (निम्न वर्ग) में हैं, जबकि जिनके पास अधिक संसाधन हैं वे उच्च क्षेत्र (उच्च वर्ग) पर कब्जा कर लेते हैं। मध्य में मध्य वर्ग दिखाई देता है। जो लोग मध्यम वर्ग का निर्माण करते हैं, इसलिए उन व्यक्तियों की तुलना में उच्चतर सामाजिक आर्थिक स्तर होता है जो निम्न वर्ग बनाते हैं, लेकिन उच्च वर्ग बनाने वाले व्यक्तियों की तुलना में कम होता है। कई देशों में यह कहा जाता है कि मध्यम वर्ग सबसे व्यापक सामाजिक वर्ग है, हालांकि इस दावे पर अक्सर समाजशास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों द्वारा सवाल उठाए जाते हैं। मध्यम वर्ग का उद्भव अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिकीकरण के बाद हुआ, जिसने नई नौकरियों के विकास की अनुमति दी और कुछ समूहों की सामाजिक चढ़ाई को सक्षम किया । जबकि मज़दूरों (निम्न वर्ग) और पूँजीपतियों (उच्च वर्ग) के बीच की खाई चौड़ी हो रही थी, उनमें से कई पेशेवर और छोटे बुर्जुआ (मध्य वर्ग) थे -

इसके मूल में, बाद में जो लोग मध्यम वर्ग का हिस्सा बने थे, वे जमींदार पूंजीपति वर्ग (निम्न कुलीनता और समृद्ध जनवादी) थे, जो व्यावसायिक, व्यावसायिक और औद्योगिक क्षेत्रों में अपनी सफलता के लिए खड़े होने लगे थे । सत्रहवीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड में हुई उदारवादी क्रांतियों के कारण भूमि-पूंजीपति वर्ग का उदय हुआ, जिसने राजशाही को कमजोर किया और इसने पूंजीपति वर्ग के पक्ष में कुलीन वर्ग को सत्ता खो दी, जो संसद में प्रवेश करने में सफल रहा। पहले से ही बीसवीं शताब्दी में उत्तरी अमेरिका में आधुनिक मध्यम वर्ग उभरा। ऑटोमोटिव उद्योग, अन्य लोगों के बीच, नवीन उत्पादन तकनीकों का उपयोग करने के लिए धन्यवाद शुरू किया, जिसके लिए कीमतों को कम करना और श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि करना संभव था। इस तरह, कम आय वाली आबादी का एक हिस्सा समृद्ध हुआ और बेहतर जीवन स्तर के लिए सहमत हुआ ।

शायद मध्यम वर्ग की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि इसके अधिकांश सदस्य इससे संबंधित होने के कारण परेशान नहीं होते हैं (जैसा कि निम्न वर्ग के साथ हो सकता है) और न ही वे नीचे उतरने से डरते हैं (कुछ ऐसा जो उच्च वर्ग को चिंतित करता है) । मध्यम वर्ग के होने से अन्य दो के संबंध में कई फायदे हैं, हालांकि यह उच्च से एक कदम नीचे है। जबकि निचले वर्ग के लोग स्वीकार्य और स्वस्थ माने जाने वाले जीवन स्तर का उपयोग नहीं कर सकते हैं, मध्य वर्ग के पास स्वास्थ्य सेवाएं हैं और आर्थिक साधन पूरे वर्ष भर में खुद को स्वाद देने और देने के लिए हैं । जबकि उनके पास उच्च वर्ग की निरंतर विलासिता नहीं है, कम से कम उन्हें किसी भी कीमत पर अपनी स्थिति खोने या मौद्रिक शक्ति की अपनी छवि बनाए रखने के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए ।

मैकाइवर और पेज के अनुसार

"किसी भी वस्तु या प्रवृत्ति को पूर्ण रूप से जानने के लिए यह आवश्यक है कि इस वस्तु की परिभाषा निश्चित कर ली जाये। इस दृष्टिका ेण से मध्यम वर्ग की परिभाषा निश्चित कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। साधारण रूप से समाज को कई प्रकार से बाँटा जाता है-उदाहरणतः लिंग के आधार पर, आयु के आधार पर, जाति और प्रजाति के आधार पर तथा धर्म के आधार पर। 1

अतः समाज के वर्गों को सेक्स, आयु, जाति और प्रजाति के आधार पर बाँटा जाता है। मैकाइवर और पेज लिखते हैं-

" अनुप्रस्थ ढंग से समाज का विभाजन करने पर उसके जो कई हिस्से बनते हैं उन्हें विभिन्न वर्गों की संज्ञा दी जाती है। साधारण रूप से इस प्रकार विभाजित होने पर समाज के तीन हिस्से होते हैं- उच्चवर्ग, मध्यम वर्ग और निम्नवर्ग | "2

Copyright@ijaer.org

मैकाइवर के अनुसार - "किसी भी वर्ग में उस वर्ग के लोगों का रुतबा या ओहदा बहुत महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, बहुधा उसी से लोगों का वर्ग निर्धारित होता है। 3 अतः रुतबा या ओहदा अपने आप नहीं बनता है यह वर्ग के सदस्यों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होता है। यही कारण है कि व्यक्ति की आर्थिक और सामाजिक स्थिति वह निर्णायक तत्त्व है जिससे उसका वर्ग निर्धारित होता है।

मध्यम वर्ग का स्वरूप

मध्ययुग के अन्तिम चरण में जब पश्चिम में औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात और विकास हुआ तथा साथ ही साथ सामन्ती समाज का पतन हुआ तो नगरों में एक नए वर्ग का जन्म हुआ, जो कालान्तर में 'नई सामाजिक संरचना' में मध्यम वर्ग के नाम से जाना गया। वस्तुतः औद्योगिक क्रान्ति की देन है- 'मध्यम वर्ग। भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के बाद ही मध्यम वर्ग का जन्म माना जाता है। अंग्रेजी शिक्षा दिक्षा, रहन-सहन, सामाजिक व्यवस्था और पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव तथा सोच व मानसिकता ने परम्परागत जीवन मूल्यों को प्रभावित किया। भारतीय सामाजिक संरचना के तत्कालीन सुधारवादी विचारों, आन्दोलनों से व जनचेतना के माध्यम से व्यापक रूप में उथल-पुथल और बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। देश में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक चेतना के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन के युग का सूत्रपात हुआ। इन परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए साहित्य इनसे अछूता नहीं रह सकता था। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप साहित्य में इनका सम्बन्ध और तत्कालीन सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

प्रेमचन्द का मध्यवर्गीय समाज

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास साहित्य में मध्यम वर्ग के अलग-अलग समुदायों का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने धर्म - भीरु, समाज-भीरु, राजनीतिक व सामाजिक रूप से जागरुक, आत्म-सम्मान के प्रति सजग, पश्चिमी रहन - सहन से प्रभावित और प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाले नितान्त गृहस्थ चरित्रों का भरपूर चित्रण किया है। समाज की अधिकांश राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक चेतना मध्यम वर्ग के हाथों में रहती है। प्रेमचन्द का युग भी इससे छूटा नहीं था। उनके चिन्तन का मुख्य आधार मध्यवर्गीय समाज व उसकी समस्याएँ थी यद्यपि उनके उपन्यासों में निम्नवर्ग, उच्चवर्ग आदि सभी वर्गों का उपयुक्त समावेश हुआ है। चूँकि प्रेमचन्द स्वयं मध्यवर्गीय समाज व परिवार से सम्बन्धित थे इसीलिए मध्यवर्गीय सोच, जड़ता, ग्रस्तता व प्रत्येक परिस्थितियों के स्वरूप व मानदण्डों के परिणाम से उनकी प्रगतिशील सोच का मजबूत रिश्ता था।

प्रेमचन्द झूठे दिखावे की ज़िन्दगी व खोखली नैतिकता के सदैव विरुद्ध थे यही कारण है कि उन्हें मध्यम वर्ग की सोच का परिमार्जन अभीप्ट था। वे कुण्ठाग्रस्त मध्यवर्गीय समाज के प्रगतिशील रूप को देखना चाहते थे। इसीलिए उनके उपन्यासों 'गोदान' से लेकर 'मंगलसूत्र (अपूर्ण) तक मध्यम वर्ग की एक सशक्त और उपादेय भूमिका रही है। मध्यम वर्ग के माध्यम से उन्होंने अपनी प्रगतिशील सोच को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। प्रेमचन्द ने अपने सभी उपन्यासों में यह दिखाने का प्रयास किया है कि मध्यम वर्ग के व्यक्ति का परिचय-क्षेत्र प्रायः विस्तृत होता है और उच्चवर्ग के लोगों के सम्पर्क में आने से उसे अभाव अखरते हैं और वह एक प्रकार के मनोवैज्ञानिक दबाव में आ जाता है।

उन्होंने अपने उपन्यास में यह भी दिखाने का सफल प्रयास किया है कि मध्यम वर्ग के लोग गृह सज्जा की वस्तुएँ जुटाने का भरसक प्रयास करते हैं वे उन वस्तुओं का उपयोग आगन्तुकों, अतिथियों की आव-भगत और सत्कार में करते हैं और प्रसन्न भी होते हैं। प्रेमचन्द के लगभग सभी उपन्यासों में यह चित्रण देखने को मिलता है कि मध्यवर्गीय समाज सम्भवतः सर्वाधिक संवेदनशील समाज है। वह अपने चारों ओर घटने वाले घटना क्रम के प्रति अत्यन्त जागरुक और सक्रिय रहता है अतः प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में मध्यम वर्ग का चित्रण केवल वस्तुपरक ही नहीं अपितु, मध्यम वर्ग की सोच उसकी मानसिकता, परिस्थिति और उसके चारों ओर के वातावरण को दृष्टि में रखकर किया है। डॉ० रामविलास शर्मा के अनुसार-

" प्रेमचन्द हिन्दुस्तानी कौम की भीतरी एकता कायम करने वाली एक जबरदस्त ताकत थे। इस कौम को तोड़ने वालों के वह सबसे बड़े दुश्मन था। वह जाति को पतन के गड्ढे में ढकेलने वाले साहित्य के कटु समालोचक थे। वह जनता के नए सांस्कृतिक जागरण को प्रगट हिन्दुस्तानी करने वाले प्रगतिशील साहित्य के अलम्बरदार थे। प्रेमचन्द निकट भविष्य में एक नए हिन्दुस्तान की एकता और जन-संस्कृति के महान प्रेरणादायक स्रोत बनने वाले हैं। "4

अतः प्रेमचन्द ने हमेशा क़ौम की एकता की बात की। वह ऐसा साहित्य कभी भी पसन्द नहीं करते थे जो किसी जाति को अन्धकार की ओर ले जाये । वह प्रगतिशील लेखक थे शायद यही वजह है कि उन्होंने हमेशा जनता में नया सांस्कृतिक जागरण जगाने की बात की। वह आने वाले भविष्य में एक नए हिन्दुस्तान की कल्पना करते हैं। उनके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण थी हिन्दुस्तान की एकता । जिसके लिए उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय तक प्रयास किया ।

मध्यम वर्ग की समस्याएँ

प्रेमचन्द निम्नवर्ग और उभरते मध्यवर्ग के लेखक थे। उन्होंने अपने साहित्य में जितना चित्रण मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का किया उतना चित्रण उच्चवर्ग का नहीं किया । यद्यपि उच्चवर्ग का चित्रण भी उनके साहित्य में अछूता नहीं रहा । प्रेमचन्द का ताल्लुक स्वयं एक मध्यमवर्गीय परिवार से था वे मध्यमवर्ग के व्यक्ति थे। चूँकि उनका परिवार मध्यमवर्ग से जुड़ा हुआ था इसलिए उनकी मध्यमवर्ग से निकटता होना स्वाभाविक थी। जिस

प्रकार प्रेमचन्द ने निम्नवर्ग का चित्रण अपने साहित्य में तयुगीन अनुभवों के आधार पर किया उसी प्रकार मध्यमवर्ग को व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर चित्रित किया है-

"जब मैं इलाहाबाद गया तो मुझे दस रूपए मिलते थे, दस रूपए में, मैं सात रुपए घर भेजता था । पाँच रूपए का ट्यूशन करके आठ रूपए में अपना गुज़र करता था। सुबह उठकर हाथ-मुँह धोकर रोटी पकाता, रोटियाँ सेंक कर स्कूल जाता । "5

अतः प्रेमचन्द मध्यवमर्गीय जीवन को व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट करते हुए नज़र आते हैं। प्रेमचन्द के समय मध्यवर्ग की स्थिति के सम्बन्ध में डॉ० इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं कि-

"मध्यवर्ग जीवन के प्रधान और नवीन आदर्शों के संघर्ष के बीच से गुज़र रहा था। प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कृतियों का सम्बन्ध विशेष रूप से मध्यमवर्गीय समाज के इसी संघर्ष से है । "

प्रेमचन्द ने अपनी कृतियों में मध्यमर्गीय समाज के संघर्षों और आदर्शों का चित्रण किया है। उनकी सहानुभूति सदैव इस वर्ग के साथ रही है उनके उपन्यासों में चित्रित प्रमुख मध्यवर्गीय पात्र नैतिकता को साथ लेकर आगे बढ़े। चूँकि, प्रेमचन्द की आस्था अनीति पर नीति की विजय पर थी इसलिए उन्होंने कहीं भी अनीति की विजय नहीं दिखायी। सदैव सत्य की जीत दिखाना उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज में आगे बढ़ने वाले मध्यवर्ग के नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। डॉ० मदान लिखते हैं कि-

"प्रेमचन्द हिन्दी के ऐसे श्रेष्ठतम उपन्यासकार हैं जिनके ग्रन्थों में दमन और उत्पीड़न के युग के समाज की आस्था का यथार्थ चित्रण और प्रतिबिम्ब मिलता है। उन्होंने उन समस्याओं और मान्यताओं का स्पष्ट चित्र अंकित किया है जो मध्यवर्ग, जमींदार, पूँजीपति, किसान, मजदूर, अछूत और समाज से बहिष्कृत व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती है।"7

अतः इन समस्याओं के प्रति उनकी दृष्टि एक प्रगतिशील लेखक की थी उन्होंने उन समस्याओं को महसूस किया जो उस समय का समाज झेल रहा था। प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग की समस्याओं को दृष्टि में रखकर डॉ० मंजुलता सिंह लिखती हैं कि-

" प्रेमचन्द का युग राष्ट्रीय जागरण के विकास और प्रसार का युग कहा जा सकता है। इस युग के अधिकांश सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलनों का प्रवर्तन मध्यमवर्ग के द्वारा हुआ। मध्यवर्ग की समस्त चेतना तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों के उन्मूलन में सक्रिय रही हैं। "8

निष्कर्ष

प्रेमचन्द का प्रवेश हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक युगान्तकारी घटना के रूप में स्वीकार कि जा चुका है। हिन्दी साहित्य के वे ऐसे प्रथम उपन्यासकार हैं जिन्होंने एक आदर्श साहित्यकार के रूप में सम्पूर्ण भारतीय मध्यवर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य किसान, मजदूर, गरीबी की समस्या, गाँव की आर्थिक विषमता से ग्रस्त लोग, मध्यवर्ग, जमींदार, निम्नवर्ग, उच्चवर्ग व सामन्तवादी नीति का मर्मस्पर्शी चित्रण है। किसी भी युग का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक जीवन एक दूसरे से परस्पर जुड़ा होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में इन सभी परिस्थितियों से सम्बन्धित समस्याओं तथा उनके समाधान का व्यापक और यथार्थ चित्र अंकित किया है। प्रेमचन्द दूरद्रष्टा साहित्यकार थे। उनका उपन्यास साहित्य वर्ग-व्यवस्था ज़मींदारी प्रथा, मज़दूर-किसान समस्या, गरीबी, स्वराज्य का प्रश्न आदि विषयों पर केन्द्रित था । प्रेमचन्द देश की हर जाति व धर्म के प्रति समान भाव रखते थे और यही भावना वह जनता तथा अपने पाठकों के बीच पहुँचाना चाहते थे । प्रेमचन्द के उपन्यास उनके युग की परिस्थितियों की वाणी है। यदि प्रेमचन्द के उपन्यासों का पूरा अध्ययन करें तो मध्यवर्ग के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट होता दिखायी देता है

संदर्भ

1. प्रेमचंद, समालोचक, पृष्ठ 25 (1925)
2. यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचन्द्र का हिन्दी साहित्य मे योगदान- एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूम : 16, अंक: 5 डीओआई 10.29070/ जेएएसआरएई
3. देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंड: 14, अंक: 2, डीओआई: 10.29070/ जेएएसआरएई
4. प्रो. चन्द्रवंशी डी.पी. (2015), "हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान " रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेस।
5. गुरुचैन सिंह (2007). दि न्यू मिडल क्लास इन इंडिया ए बायोग्राफिकल एनालिसिस, रावत पब्लिकेशन, पृ. 19, जयपुर
6. लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप का इतिहास, खंड -1, प्रकाशन संस्थान।
7. दास श्यामसुंदर (1982), भारतीय मध्यवर्ग, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 58
8. संजय जोशी, फ्रैक्चर्ड मार्डनिटी, ओ यू पी, 2001, पृ. 5
9. प्रेमचन्द, शिवरानी देवी, प्रेमचन्द: घर में, 1956, आत्माराम एन्ड संस प्रकाशक, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, पृष्ठ-10
10. मदान, डॉ० इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963 राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली,
11. सिंह, डॉ० मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों मे मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करोलबाग, दिल्ली, पृष्ठ 83